



भारतीय खाद्य निगम
FOOD CORPORATION OF INDIA

सुरक्षित अन्न | समृद्ध भारत

अंक-4
प्रथम प्रकाशन वर्ष 2026-27

खाद्यपूर्णा दर्पण



संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप-समिति की निरीक्षण बैठक
दिनांक : 20 अगस्त से 22 अगस्त, 2026



भारतीय खाद्य निगम,
आंचलिक कार्यालय (उत्तर) नोएडा



अनुक्रमणिका

स्वाद्यपूर्णा दर्पण

अंक-4

प्रथम प्रकाशन
वर्ष 2026-27

प्रधान संरक्षक :

के. वि. नागि रेड्डी, भार.सं.से.,
कार्यकारी निदेशक (उ.)

संरक्षक :

संदीप कुमार पाण्डेय,
महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक :

डॉ. ए. वी. राव,
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादन सहयोग :

रिमझिम,
सहायक श्रेणी प्रथम (राजभाषा)

संदेश	1-6
संपादक की कलम से...	7
क्या यह मेरी भूल तो नहीं?	8
रामचरितमानस के कुछ प्रसिद्ध उद्धरण	9
एनक्कु तमिल तेरियादु" से "एनक्कु तमिल तेरियम" की मेरी यात्रा	11
बेटियां हैं रौनक तो बेटे हैं संबल	13
जीवन जी के तो देखो	14
रणभूमि	15
Accounts यानि लेखा-जोखा का जीवन में महत्व	16
बारिश की बूंदें	18
राजभाषा : संवाद से सुशासन तक की सशक्त यात्रा	21
अन्न का रोमांच: खेत की मिट्टी से जुबान की तृप्ति तक का महासंग्राम	23
नीड़ से नभ तक	25
जीवन का मौन	26
मुस्कुराते चेहरे के पीछे	27
बीज से भोज तक	28
"राजभाषा हिन्दी"	29
खामोश हो क्यों?	30
कहन की आबरू	31
भारत की साहसिक पहल: विश्व का सबसे बड़ा अनाज भंडारण योजना	32
मैं खुद को अधूरा करती जाती हूँ	34
आज़ादी और युवा	35
भा.खा. नि. आं.का. (उ.) में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियां	36
14-27 नवंबर 2025 तक आयोजित 44वें भारतीय अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला	38
सतर्कता जागरूकता सप्ताह	39
संसदीय रा.समिति द्वारा अधीनस्थ कार्यालयों का सफल राजभाषा निरीक्षण	40



भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी दिवस-2026 एवं छठे अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के गरिमामय अवसर पर नराकास (उपक्रम), नोएडा को 'नराकास प्रोत्साहन सम्मान 2025-26' से सम्मानित किया गया। यह प्रतिष्ठित सम्मान नराकास (उपक्रम), नोएडा के अध्यक्ष कार्यालय—भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उत्तर), नोएडा की ओर से श्री संदीप कुमार पाण्डेय, उपाध्यक्ष तथा श्री पुखराज मीना, सदस्य सचिव द्वारा ग्रहण किया गया। यह सम्मान राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं कार्यान्वयन के क्षेत्र में नराकास (उपक्रम), नोएडा द्वारा किए जा रहे सराहनीय प्रयासों की उपलब्धि का प्रतीक है।





रविन्द्र कुमार अग्रवाल, भा.प्र.से.
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
भारतीय खाद्य निगम

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय की गृह-पत्रिका 'खाद्यपूर्णा दर्पण' के चतुर्थ अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। किसी भी संस्थान की प्रगति में उसकी आंतरिक संचार व्यवस्था और सृजनात्मक अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण स्थान होता है। 'खाद्यपूर्णा दर्पण' न केवल हमारी उपलब्धियों का दर्पण है, बल्कि यह निगम के कार्मिकों की साहित्यिक अभिरुचि और नवाचारों को साझा करने का एक सशक्त माध्यम भी बन चुकी है।

भारतीय खाद्य निगम राष्ट्र की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में एक स्तंभ की भांति कार्य कर रहा है। विशेष रूप से, उत्तर अंचल हमारे निगम का सबसे प्रभावी और मुख्य परिचालन क्षेत्र है। देश के 'अन्न भंडार' के रूप में उत्तर अंचल की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, जहाँ से खाद्यान्न की अधिप्राप्ति और प्रेषण पूरे देश की खाद्य श्रृंखला को जीवंत बनाए रखता है। इस अंचल के अधिकारियों और कर्मचारियों का कठिन परिश्रम और समर्पण ही हमारे 'अन्न सुरक्षा से पोषण सुरक्षा' के संकल्प को सिद्ध करने का आधार है।

अन्न सुरक्षा के साथ ही केंद्र सरकार की राजभाषा कार्यान्वयन नीति के अनुपालन के दायित्व का निर्वहन भी उत्तर अंचल द्वारा बखूबी किया जा रहा है। इसकी बानगी पत्रिका के इस चौथे अंक के प्रकाशन के साथ दृष्टिगत हो रही है। वित्तीय वर्ष 2024-25 में प्रथमांक के बाद वित्तीय वर्ष 2025-26 में द्वितीय व तृतीय अंक का सफल प्रकाशन इस बात को स्थापित करता है कि उत्तर अंचल इस दिशा में लगातार अग्रसर है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और रचनात्मक लेखन को बढ़ावा देने का यह प्रयास प्रशंसनीय है। मुझे विश्वास है कि 'खाद्यपूर्णा दर्पण' का यह अंक सूचनाप्रद होने के साथ-साथ पाठकों को प्रेरित भी करेगा।

मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादकीय टीम और सभी योगदानकर्ताओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

(रविन्द्र कुमार अग्रवाल)



जयंत शर्मा
कार्यकारी निदेशक (राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम
मुख्यालय

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उ.) की गृह-पत्रिका 'खाद्यपूर्णा दर्पण' का चतुर्थ अंक प्रकाशित होने जा रहा है। एक संस्थान की जीवंतता उसके द्वारा किए जाने वाले कार्यों के साथ-साथ उसकी वैचारिक अभिव्यक्ति से भी मापी जाती है। 'खाद्यपूर्णा दर्पण' इस दिशा में एक सफल सेतु का कार्य कर रही है, जो निगम के तकनीकी कार्यों और राजभाषा हिंदी के साहित्यिक पक्ष के बीच एक सुंदर संतुलन स्थापित करती है।

भारतीय खाद्य निगम जैसे विशाल संगठन में, जहाँ हम उत्तर अंचल जैसे मुख्य ऑपरेशनल क्षेत्रों से लेकर सुदूर अंचलों तक राष्ट्र की सेवा कर रहे हैं, राजभाषा हिंदी हमें संपर्क और संवाद के एक सूत्र में पिरोती है। राजभाषा विभाग, मुख्यालय का निरंतर यह प्रयास रहा है कि न केवल कार्यालयी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़े, बल्कि कार्मिकों के भीतर छिपी सृजनात्मक प्रतिभा को भी एक उचित मंच प्राप्त हो।

पत्रिका का यह अंक विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें निगम के विभिन्न आयामों, विशेषकर परिचालन संबंधी सफलताओं और तकनीकी प्रगति को सरल व सुबोध हिंदी में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। मेरा मानना है कि जब हम अपनी उपलब्धियों और विचारों को अपनी भाषा में व्यक्त करते हैं, तो उसका प्रभाव अधिक गहरा और स्थाई होता है।

मैं इस अंक के संपादन और प्रकाशन से जुड़ी पूरी राजभाषा टीम को उनके अथक प्रयासों के लिए बधाई देता हूँ। मुझे विश्वास है कि 'खाद्यपूर्णा' का यह चतुर्थ अंक अपने सुरुचिपूर्ण लेखों, कविताओं और संस्मरणों के माध्यम से पाठकों के बीच अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाएगा।

मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

जयंत शर्मा.
(जयंत शर्मा)



के. वि. नागि रेड्डी, भा.र.सं.से.
कार्यकारी निदेशक (उत्तर)
भारतीय खाद्य निगम,
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

संदेश

भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उ.) नोएडा की गृह पत्रिका 'खाद्यपूर्णा दर्पण' के चतुर्थ अंक का प्रकाशन मेरे लिए अत्यंत हर्ष एवं गर्व का विषय है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय की कार्य-संस्कृति, रचनात्मक प्रतिभा, साहित्यिक अभिरुचि तथा सामूहिक सोच का सुंदर प्रतिबिंब है।

भारतीय खाद्य निगम देश की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। खाद्यान्नों की खरीद से लेकर उनके सुरक्षित भंडारण, संरक्षण, परिवहन तथा लक्षित वितरण तक निगम के प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी का योगदान राष्ट्र की सेवा से जुड़ा हुआ है। हमारे कार्य की सफलता केवल प्रक्रियाओं और प्रणालियों से नहीं, बल्कि उनमें निहित कर्तव्यनिष्ठा, उत्तरदायित्व, पारदर्शिता और टीम भावना से सुनिश्चित होती है।

इसी प्रकार, राजभाषा हिंदी हमारे कार्यालयीन कार्यों में संवाद और सहभागिता का सशक्त माध्यम है। हिंदी का सरल, सहज एवं प्रभावी प्रयोग कार्यों को अधिक सुगम बनाने के साथ-साथ संगठन में आत्मीयता और समन्वय की भावना को भी मजबूत करता है। आज जब कार्यालयीन कार्यप्रणाली तेजी से डिजिटल और तकनीकी हो रही है, तब हिंदी को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ते हुए उसके प्रयोग को और व्यापक बनाना समय की आवश्यकता है।

'खाद्यपूर्णा दर्पण' इसी रचनात्मक और सकारात्मक कार्य-संस्कृति का परिचायक है। यह केवल एक गृह पत्रिका नहीं, बल्कि हमारे कार्यालय परिवार की सृजनात्मक आवाज है। इसमें प्रकाशित साहित्यिक रचनाएँ, लेख, संस्मरण, कविताएँ एवं विविध सामग्री हमारे सहकर्मियों की बहुआयामी प्रतिभा से परिचित कराती हैं। ऐसी रचनात्मक पहलें कार्यस्थल को अधिक जीवंत, संवेदनशील और सकारात्मक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

मुझे विश्वास है कि 'खाद्यपूर्णा दर्पण' का यह अंक पाठकों को ज्ञानवर्धक सामग्री के साथ-साथ रचनात्मक आनंद भी प्रदान करेगा तथा हिंदी के प्रति हमारे लगाव और कार्यालयीन कार्यों में इसके प्रयोग को और सुदृढ़ करेगा। मैं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा रचनाकारों को उनके उत्साह, सहयोग और रचनात्मक योगदान के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

के. वि. नागि रेड्डी
(के. वि. नागि रेड्डी)



ओम प्रकाश डाणी
मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम,
मुख्यालय

संदेश

भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उ.) नोएडा की गृह पत्रिका 'खाद्यपूर्णा दर्पण' के चतुर्थ अंक के प्रकाशन के अवसर पर मुझे अत्यंत हर्ष एवं प्रसन्नता हो रही है। गृह पत्रिका किसी भी कार्यालय की कार्य-संस्कृति, सृजनात्मकता, संवेदनशीलता तथा राजभाषा के प्रति उसकी प्रतिबद्धता का जीवंत दस्तावेज होती है। इस दृष्टि से 'खाद्यपूर्णा दर्पण' का निरंतर प्रकाशन निस्संदेह सराहनीय प्रयास है।

भारतीय खाद्य निगम देश की खाद्य सुरक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है। खाद्यान्नों की खरीद, भंडारण, परिवहन एवं वितरण जैसे महत्वपूर्ण दायित्वों के निर्वहन में निगम के अधिकारी एवं कर्मचारी राष्ट्रसेवा की भावना से कार्य करते हैं। हमारे दैनिक कार्यों में राजभाषा हिंदी का सहज, सरल एवं प्रभावी प्रयोग न केवल कार्यालयीन कार्यों को जनसुलभ बनाता है, बल्कि संगठन में आपसी संवाद और कार्य-संस्कृति को भी सुदृढ़ करता है। राजभाषा हिंदी के प्रयोग को केवल एक प्रशासनिक दायित्व के रूप में न देखकर इसे कार्यकुशलता, सहभागिता और आत्मीयता के माध्यम के रूप में अपनाया जाना चाहिए।

आज का युग तकनीक और डिजिटल संचार का युग है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल प्लेटफॉर्म, ई-ऑफिस तथा विभिन्न तकनीकी माध्यमों ने हमारे कार्य करने के तौर-तरीकों में व्यापक परिवर्तन किया है। ऐसे समय में हिंदी के तकनीकी एवं डिजिटल स्वरूप को अपनाना और उसे कार्यालयीन कार्यप्रणाली का अभिन्न हिस्सा बनाना हमारी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

'खाद्यपूर्णा दर्पण' जैसे प्रकाशन कर्मचारियों को अपनी साहित्यिक, रचनात्मक एवं वैचारिक प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करते हैं। ऐसी पत्रिकाएँ कार्यालय को केवल कार्यस्थल न बनाकर एक जीवंत रचनात्मक परिवार का स्वरूप प्रदान करती हैं। मेरा विश्वास है कि इस अंक में प्रकाशित विविध रचनाएँ पाठकों को ज्ञान, आनंद एवं नई दृष्टि प्रदान करेंगी तथा हिंदी के प्रति आत्मीयता को और प्रगाढ़ करेंगी।

मैं 'खाद्यपूर्णा दर्पण' के चतुर्थ अंक के प्रकाशन पर भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उ.) नोएडा के कार्यालय प्रमुख, राजभाषा अनुभाग, पत्रिका के संपादकीय मंडल एवं सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

ओम प्रकाश
(ओम प्रकाश डाणी)



अनुपम बी. व्यास
मुख्य महाप्रबंधक (सामान्य)
भारतीय खाद्य निगम
आंचलिक कार्यालय (उ.)

संदेश

भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उ.) नोएडा की गृह पत्रिका 'खाद्यपूर्णा दर्पण' के चतुर्थ अंक के प्रकाशन के अवसर पर मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय की कार्य-संस्कृति, रचनात्मक प्रतिभा और सामूहिक चेतना का सुंदर प्रतिबिंब है। इसके माध्यम से अधिकारी एवं कर्मचारी अपनी साहित्यिक, रचनात्मक एवं वैचारिक प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का अवसर प्राप्त करते हैं।

भारतीय खाद्य निगम देश की खाद्य सुरक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। खाद्यान्नों की खरीद, भंडारण, संरक्षण, परिवहन एवं वितरण जैसे महत्वपूर्ण दायित्वों के निर्वहन में निगम के प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी का योगदान राष्ट्रसेवा से जुड़ा है।

राजभाषा हिंदी हमारे कार्यालयीन कार्यों को सरल, सहज एवं प्रभावी बनाने का सशक्त माध्यम है। हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग केवल राजभाषा नीति के अनुपालन तक सीमित न रहकर हमारे दैनिक कार्यों एवं व्यवहार का स्वाभाविक हिस्सा बनना चाहिए। वर्तमान तकनीकी युग में हिंदी को डिजिटल माध्यमों एवं आधुनिक तकनीक से जोड़ना भी समय की आवश्यकता है।

'खाद्यपूर्णा दर्पण' जैसी गृह पत्रिकाएँ कार्यस्थल पर रचनात्मकता, संवेदनशीलता और सकारात्मकता को बढ़ावा देती हैं। मुझे विश्वास है कि इस अंक में प्रकाशित रचनाएँ पाठकों को ज्ञान, प्रेरणा एवं आनंद प्रदान करने के साथ-साथ हिंदी के प्रति आत्मीयता को भी सुदृढ़ करेंगी।

मैं 'खाद्यपूर्णा दर्पण' के चतुर्थ अंक के प्रकाशन पर आंचलिक कार्यालय (उ.) नोएडा के अधिकारियों एवं कर्मचारियों, संपादकीय मंडल तथा सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। पत्रिका निरंतर नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करे और निगम में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं रचनात्मक प्रयोग को नई गति प्रदान करे—इसी शुभकामना के साथ।

अ. व्यास

(अनुपम बी. व्यास)



संदीप कुमार पाण्डेय
महाप्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम,
आंचलिक कार्यालय (उ.)

संदेश

भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उ.) नोएडा की गृह पत्रिका 'खाद्यपूर्णा दर्पण' के चतुर्थ अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता है। यह पत्रिका निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति के साथ-साथ कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रति प्रतिबद्धता का परिचायक है। वास्तव में—

“विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्”

अर्थात् ज्ञान विनम्रता प्रदान करता है और विनम्रता से व्यक्ति योग्य बनता है—इसी भाव को यह पत्रिका साकार करती है।

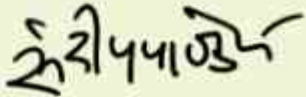
भारत सरकार की राजभाषा नीति का मूल उद्देश्य हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करते हुए सरकारी कार्यों में सरलता, सहजता और प्रभावशीलता लाना है। इस दिशा में हमारा प्रयास होना चाहिए कि हिंदी का प्रयोग केवल निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति तक सीमित न रहकर हमारे दैनिक कार्यालयीन कार्यों का स्वाभाविक हिस्सा बने।

आज तकनीक के तीव्र विकास के दौर में हिंदी के प्रयोग के नए अवसर उपलब्ध हुए हैं। डिजिटल माध्यमों, ई-ऑफिस तथा आधुनिक तकनीकी साधनों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग राजभाषा के विस्तार को नई दिशा दे सकता है। यह समय है जब हम “योगः कर्मसु कौशलम्” की भावना के साथ तकनीक और भाषा दोनों में दक्षता प्राप्त करें।

‘खाद्यपूर्णा दर्पण’ इस प्रयास को रचनात्मक आधार प्रदान करती है। मुझे विश्वास है कि इसका यह अंक हिंदी के प्रति रुचि एवं अनुराग को बढ़ाने के साथ-साथ निगम के कार्यों और उपलब्धियों को भी प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करेगा। यह पत्रिका वास्तव में हमारे संगठन की सृजनात्मक चेतना का दर्पण है।

चतुर्थ अंक के सफल प्रकाशन के लिए आंचलिक कार्यालय (उ.) नोएडा के अधिकारियों एवं कर्मचारियों, संपादकीय मंडल तथा सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

शुभकामनाओं सहित,


(संदीप कुमार पाण्डेय)



डॉ. ए. वी. राव
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम
आंचलिक कार्यालय (उत्तर)

संपादक की कलम से...

प्रिय पाठकगण,

'खाद्यपूर्णा दर्पण' का यह चतुर्थ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे विशेष प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका केवल राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतिबिंब नहीं, बल्कि भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उत्तर), नोएडा के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति का भी एक सशक्त मंच है।

राजभाषा का वास्तविक उद्देश्य तभी सार्थक होता है, जब हिंदी हमारे कार्यालयीन कार्यों में सहज, स्वाभाविक और प्रभावी रूप से प्रयुक्त हो। पत्राचार, टिप्पणियों, प्रतिवेदनों से लेकर दैनिक कार्यप्रणाली तक हिंदी का निरंतर प्रयोग न केवल राजभाषा नीति के अनुपालन में सहायक है, बल्कि कार्य को सरल और अधिक प्रभावी बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आज का कार्यपरिवेश तेजी से तकनीक-आधारित हो रहा है। ई-ऑफिस, डिजिटल फाइल प्रबंधन, ऑनलाइन संचार, यूनिकोड, वॉइस-टू-टेक्स्ट तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित उपकरणों ने हिंदी के प्रयोग को और अधिक सहज एवं सुलभ बनाया है। आवश्यकता इस बात की है कि हम इन तकनीकी सुविधाओं का अधिकतम उपयोग करते हुए हिंदी को आधुनिक कार्यप्रणाली और नवाचार से जोड़ें।

'खाद्यपूर्णा दर्पण' इसी प्रयास की एक कड़ी है। इस अंक में प्रकाशित रचनाएँ न केवल हमारे साथियों की साहित्यिक एवं रचनात्मक प्रतिभा को सामने लाती हैं, बल्कि हिंदी के प्रति उनके जुड़ाव और संवेदनशीलता को भी अभिव्यक्त करती हैं।

आशा है कि यह अंक आप सभी को रुचिकर लगेगा और कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को नई ऊर्जा तथा नई दिशा प्रदान करेगा।

शुभकामनाओं सहित

डॉ. ए. वी. राव



अनुपम बी व्यास
मुख्य महाप्रबंधक (सामान्य)
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

क्या यह मेरी भूल तो नहीं ?



सोचता हूँ कभी, कि क्या ठीक से तुम्हें जानता हूँ मैं?
जानकर भी, क्या पूरी तरह पहचानता हूँ मैं ?

और क्या, यह मेरी कोई भूल तो नहीं कि,
माँ, तुम्हें सिर्फ माँ की तरह जानता हूँ मैं ??

किसी किसान की भाँति, पूरे आस और विश्वास से,
खुरदरी ज़मीन में, बीज नया, तुम बोती हो।

फिर नाजूक से पौधे को उसके पेड़ बनने तक,
अपनी छत्र-छाया में, जीवन भर उसे सहेजती हो।

अपने-आप को पेड़ में, विशाल, फलदार दमदार, मानता हूँ मैं,
लेकिन अनदेखी जड़ों को अपनी, क्या पहचानता हूँ मैं??

और क्या, यह मेरी कोई भूल तो नहीं कि,
माँ, तुम्हें सिर्फ माँ की तरह जानता हूँ मैं ??

किसी गीतकार की तरह, शब्द-शब्द को चुनकर,
अपने सूक्ष्म-अहसासों और अनुभवों को गीतों में पिरोती हो।

फिर गजलकर की तरह, अपने ही नज़्म-शेरों को
संस्कारों की बहरों और मेहनत की बंदिशों में बांधती हो।

अपने-आप को गीत-सदाबहार, गज़ल-वजनदार मानता हूँ मैं,
लेकिन, रचनाकार को अपने ही, क्या पहचानता हूँ मैं ??
और क्या, यह मेरी कोई भूल तो नहीं कि,
माँ, तुम्हें सिर्फ माँ की तरह जानता हूँ मैं ??

सामान्य सी छवि को लिए, ओट में छिपी रहती हो,
गुण-अनगिनत, कला-निपुण फिर भी, घूँघट में घिरी रहती हो।

असाधारण साहस, मगर ममता का अथाह सागर रखती हो
साधारण से रूप में अपने, विश्वरूप को समेटती हो।

अपने-आप को जगत की अद्भुत अनमोल सृष्टि मानता हूँ मैं,
लेकिन सृष्टिकार को अपने ही, क्या पहचानता हूँ मैं ??

और क्या, यह मेरी कोई भूल तो नहीं कि,
माँ, तुम्हें सिर्फ माँ की तरह जानता हूँ मैं ??



संदीप कुमार पाण्डेय
महाप्रबंधक (राजभाषा),
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

रामचरितमानस के कुछ प्रसिद्ध उद्धरण

1- बंदऊँ गुरु पद पदुम परागा, सुरुचि सुवास सरस अनुरागा ॥

अमिअ मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भव रुज परिवारू ॥

भावार्थ- मैं गुरु महाराज के चरण कमलों की रज की वन्दना करता हूँ, जो सुरुचि (सुंदर स्वाद), सुगंध तथा अनुराग रूपी रस से पूर्ण है। वह अमर मूल (संजीवनी जड़ी) का सुंदर चूर्ण है, जो सम्पूर्ण भव रोगों के परिवार को नाश करने वाला है ॥ 1 ॥

2- मोरि सुधारिहि सो सब भाँती। जासु कृपा नहिं कृपाँ अघाती ॥

राम सुस्वामि कुसेवकु मोसो। निज दिसि देखि दयानिधि पोसो ॥

भावार्थ- वे श्री रामजी मेरी सब तरह से सुधार (बिगड़ी को ठीक) लेंगे, जिनकी कृपा कभी भी कृपा करते-करते अघाती (थकती या तृप्त होकर रुकती) नहीं है। श्री राम जैसे उत्तम स्वामी हैं और मुझ जैसा बुरा (तुच्छ) सेवक है! इतने पर भी उन दयानिधि (दया के सागर) ने केवल अपनी ओर (अपने स्वभाव) को देखकर मेरा पालन-पोषण किया है।

3- बिनु सतसंग विवेक न होई। राम कृपा बिनु सुलभ न सोई ॥

होई विवेक मोह भ्रम भागा। तब रघुनाथ चरन अनुरागा ॥

भावार्थ- सत्संग के बिना विवेक नहीं होता और श्री रामजी की कृपा के बिना वह सत्संग सहज में मिलता नहीं। सत्संगति आनंद और कल्याण की जड़ है। सत्संग की सिद्धि (प्राप्ति) ही फल है और सब साधन तो फूल है ॥

4- सोइ जानइ जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई ॥

तुम्हरिहि कृपाँ तुम्हहि रघुनंदन। जानहिं भगत भगत उर चंदन ॥

भावार्थ- हे प्रभु! आपको वही मनुष्य जान पाता है जिसे आप स्वयं ज्ञान कराते हैं (जनाते हैं)। और जैसे ही वह आपको जानता है, वह आपके ही स्वरूप (आप जैसा ही पवित्र व तद्रूप) हो जाता है। हे रघुनंदन! हे भक्तों के हृदय को शीतलता प्रदान करने वाले चंदन रूप भगवान! आपकी कृपा से ही भक्त आपको जान पाते

5- भृकुटि बिलास नचावइ ताही। अस प्रभु छाड़ि भजिअ कहु काही ॥

मन क्रम बचन छाड़ि चतुराई। भजत कृपा करिहहिं रघुराई ॥

भावार्थ- भगवान उस माया को भौंह के इशारे पर नचाते हैं। ऐसे प्रभु को छोड़कर कहो, (और) किसका भजन किया जाए। मन, वचन और कर्म से चतुराई छोड़कर भजते ही रघुनाथ कृपा करेंगे।

श्रीराम के अनुसार विजय के लिए आवश्यक गुण (विजय रथ के प्रतीक):

(जीवन के सभी क्षेत्रों में लागू)

गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस के लंकाकांड में, जब विभीषण देखते हैं कि रावण एक विशाल और शक्तिशाली रथ पर सवार है और भगवान श्री राम बिना किसी रथ के (पैदल) युद्ध के मैदान में खड़े हैं, तो वे चिंतित हो जाते हैं। तब भगवान राम विभीषण को उस 'धर्ममय विजय रथ' (Vibhishan Gita / विभीषण गीता) के बारे में बताते हैं, जो जीवन और युद्ध दोनों में वास्तविक विजय प्राप्त करने के लिए आवश्यक है।

भगवान राम के अनुसार, भौतिक रथ या अस्त्र-शस्त्रों से नहीं, बल्कि आंतरिक गुणों, सदाचार और धर्म के बल पर ही सच्ची विजय प्राप्त की जा सकती है। इस प्रसंग की मुख्य चौपाई इस प्रकार है।

सुनहु सखा, कह कृपानिधाना, जेहि जय होई सो स्यन्दन आना।
 सौरज धीरज तेहि रथ चाका, सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका।
 बल बिबेक दम पर-हित घोरे, छमा कृपा समता रजु जोरे।
 ईस भजनु सारथी सुजाना, बिरति चर्म संतोष कृपाना।
 दान परसु बुधि सक्ति प्रचण्डा, बर बिग्यान कठिन कोदंडा।
 अमल अचल मन त्रोन सामना, सम जम नियम सिलीमुख नाना।
 कवच अभेद बिप्र-गुरुपूजा, एहि सम बिजय उपाय न दूजा।
 सखा धर्ममय अस रथ जाके, जीतन कहँ न कतहँ रिपु ताके।



भगवान राम ने विजय के लिए जिन आवश्यक तत्वों को एक रूपक (Chariot Metaphor) के माध्यम से समझाया है, वे इस प्रकार वर्गीकृत हैं:

1. रथ के मुख्य भाग (The Foundation)

- शौर्य (वीरता) और धैर्य: ये इस विजय रथ के दो पहिए हैं। विपरीत परिस्थितियों में भी अडिग रहना ही धैर्य है।
- सत्य और शील (अच्छा आचरण): ये इस रथ की मजबूत ध्वजा (झंडा) और पताका हैं।

2. रथ के घोड़े और लगाम (The Control & Direction)

- चार घोड़े: रथ को खींचने वाले चार घोड़े बल, विवेक (सही-गलत का ज्ञान), दम (इंद्रिय नियंत्रण), और परहित (दूसरों की भलाई) हैं।
- लगाम (रास): इन घोड़ों को नियंत्रित करने वाली डोरियां क्षमा, दया, और समता (समानता का भाव) हैं।
- सारथी: भगवान का निरंतर स्मरण या ईश्वर भजन ही इस रथ को हांकने वाला चतुर सारथी है।

3. सुरक्षा और हथियार (The Weapons of Righteousness)

- ढाल और तलवार: वैराग्य (आसक्ति न होना) इस रथ की ढाल है और संतोष इसकी तलवार है।
- धनुष और बाण: श्रेष्ठ विज्ञान (विशेष ज्ञान/तर्क) कठिन धनुष है; तथा शम (मन का वश में होना), यम और नियम इसके अचूक बाण हैं।
- तरकश (Quiver): एक निर्मल और अचल (स्थिर) मन ही तीरों को रखने वाला तरकश है।
- कवच (Armor): गुरु और विद्वानों (विप्र) का सम्मान करना ही वह अभेद्य कवच है, जिसे कोई शत्रु नहीं भेद सकता।

निष्कर्ष (The Bottom Line)

भगवान राम विभीषण से कहते हैं कि जिसके पास ऐसा धर्ममय रथ है, उसके लिए संसार में कोई ऐसा शत्रु नहीं है जिसे वह जीत न सके। यदि कोई व्यक्ति अपने जीवन में इन नैतिक और आध्यात्मिक गुणों को धारण कर लेता है, तो वह न केवल बाहरी शत्रुओं पर बल्कि अपने भीतर के विकारों (काम, क्रोध, लोभ, अहंकार) पर भी विजय पा लेता है।



डॉ. ए. वी. राव
उप महाप्रबंधक (राजभाषा),
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

"एनक्कु तमिल तेरियादु" से "एनक्कु तमिल तेरियम" की मेरी यात्रा

(मुझे तमिल नहीं आती" से लेकर "मुझे तमिल आती है" तक का सफ़र)

मैं तेलुगु भाषी हूँ। कोयंबटूर में बीते वे दो साल मेरे लिए केवल एक नई नौकरी का अनुभव नहीं थे, बल्कि उन्होंने मेरे सोचने और सुनने के तरीके को भी पूरी तरह बदल दिया था।

मेरी पहली तैनाती तमिलनाडु के कोयंबटूर में हुई थी। वहाँ हर तरफ तमिल बोली जाती थी और मुझे तमिल का एक शब्द भी नहीं आता था। शुरुआत में मैंने भाषा समझने की कोशिश की, लेकिन जब बात समझ नहीं आती थी, तो मेरे दिमाग ने एक अनूठा 'सुरक्षा कवच' बना लिया। सड़क पर चलते हुए, बस में सफर करते हुए या होटल में खाते हुए... मेरे आस-पास लोग क्या बोल रहे हैं, इस पर ध्यान देना मैंने पूरी तरह बंद कर दिया। मेरे लिए आस-पास की बातचीत महज़ एक 'पृष्ठभूमि का संगीत' (Background Noise) बनकर रह गई थी।

मैं अपने ही विचारों की दुनिया में रहने लगा। अंग्रेज़ी और हिंदी से दफ़्तर का काम तो जैसे-तैसे चल जाता था, लेकिन बाकी दुनिया से मैंने खुद को अनसुना (tune out) करना सीख लिया था।

घर वापसी और अहसास का झटका

दो साल बाद जब मुझे पहली बार लंबी छुट्टी मिली, तो मैं अपने घर गुंटूर (आंध्र प्रदेश) लौटा।

ट्रेन से उतरते ही स्टेशन पर हर तरफ तेलुगु की आवाज़ें गूँज रही थीं। चाय वाले की पुकार, ऑटो वालों की बहस, लोगों का आपस में हाल-चाल पूछना... सब कुछ मेरी अपनी मातृभाषा तेलुगु में था।

लेकिन तभी मेरे साथ एक अजीब घटना हुई। मैं ऑटो में बैठा। ऑटो वाला फोन पर किसी से बहुत उत्सुकता से तेलुगु में बात कर रहा था। रास्ते में भी कई लोग आपस में बोल रहे थे। लेकिन मेरा दिमाग उन आवाज़ों को सुनकर भी 'प्रोसेस' नहीं कर रहा था! मैं उन्हें भी वैसे ही अनसुना कर रहा था, जैसे कोयंबटूर में तमिल को करता था।

अचानक मुझे गहरा अहसास हुआ—“यह तो मेरी अपनी मातृभाषा तेलुगु है! मैं इसे क्यों अनदेखा कर रहा हूँ?”

मुझे समझ आया कि अनजानी भाषा से बचते-बचते मेरे कानों को अनसुना करने की ऐसी आदत पड़ गई थी कि मैं अपनी ही मातृभाषा से कटने लगा था।

ब्लैक एंड व्हाइट टी.वी. और विज्ञापनों का जादू

वापस कोयंबटूर लौटने पर भाषा की दीवार के कारण मेरा हर दिन एक नया संघर्ष था। बाज़ार या दुकान पर जाओ, तो मैं लगभग मूक-बधिर सा बन जाता था। सामान मांगना होता, तो सिर्फ इशारे करने पड़ते थे।

मेरी इस परेशानी को देखकर मेरे एक सहकर्मी को तरस आ गया। वे अपने घर से एक छोटा सा ब्लैक एंड व्हाइट टी.वी. ले आए और बोले—“मित्र, शाम को कमरे पर तुम्हारा समय आराम से कट जाएगा, इसे रख लो।”

मैं बहुत खुश हुआ। लेकिन जैसे ही टी.वी. चालू किया, मेरी खुशी थोड़ी ठंडी पड़ गई—उन दिनों सिर्फ दूरदर्शन आता था और उस पर सारे कार्यक्रम केवल तमिल में प्रसारित होते थे। शुरुआत में निराशा हुई, लेकिन समय काटने के लिए मैं रोज शाम को वही टी.वी. देखने लगा।

धीरे-धीरे एक कमाल की बात हुई। टी.वी. पर आने वाले विज्ञापनों ने मुझे तमिल सिखाना शुरू कर दिया! वही वाशिंग पाउडर, साबुन और टूथपेस्ट के विज्ञापन जो मैं बचपन से अपनी मातृभाषा तेलुगु और हिंदी में देखता आ रहा था, अब तमिल में आ रहे थे। चूँकि मुझे विज्ञापनों की कहानी और दृश्य पहले से पता थे, इसलिए मैं तमिल शब्दों के अर्थ आसानी से जोड़ने लगा।



एक 'मजेदार' समस्या और सीख

विज्ञापनों से शब्द तो समझ आने लगे, लेकिन असली समस्या बाज़ार में बनी हुई थी। जब मैंने अपने सहकर्मी को अपनी लाचारी बताई, तो उन्होंने मुझे एक 'रामबाण' उपाय सुझाया:

"तुम बस एक वाक्य याद कर लो—'एनक्कु तमिल तेरियादु' (मुझे तमिल नहीं आती)। जब तुम यह बोलोगे, तो दुकानदार समझ जाएगा कि तुम स्थानीय नहीं हो और वह तुम्हें हिंदी, अंग्रेज़ी या इशारों से समझाने की कोशिश करेगा।"

उपाय तो बहुत बढ़िया लगा, लेकिन परिणाम बिल्कुल उल्टा निकल आया!

अगले दिन जब मैं दुकान पर गया और बहुत शुद्ध व स्पष्ट उच्चारण में बोला—"अन्ना, एनक्कु तमिल तेरियादु!"—तो दुकानदार उल्टे मुझसे पक्की तमिल में तेज़ी से बात करने लगा! वह थोड़ा गुस्सा भी हुआ और कहने लगा—"तुम इतनी अच्छी तमिल में कह रहे हो कि तुम्हें तमिल नहीं आती? मज़ाक कर रहे हो!"

मेरी समस्या सुलझने के बजाय और बढ़ गई, क्योंकि वे समझ रहे थे कि मैं तमिल जानता हूँ और जानबूझकर बहाना बना रहा हूँ।

असमिया और बांग्ला का नया अनुभव

उस घटना के बाद मैंने किसी वाक्य का रट्टा मारने का विचार छोड़ दिया और टी.वी., विज्ञापनों तथा आस-पास के माहौल से तमिल को स्वाभाविक रूप से समझना शुरू किया। धीरे-धीरे वह समय भी आया जब मैं न केवल सहजता से बाज़ार में खरीदारी करने लगा, बल्कि लोगों से बातचीत भी करने लगा। लाचारी का वह दौर पीछे छूट चुका था—अब मैं "एनक्कु तमिल तेरियादु" (मुझे तमिल नहीं आती) की हिचकिचाहट से निकलकर "एनक्कु तमिल तेरियम" (मुझे तमिल आती है) के आत्मविश्वास तक पहुँच चुका था।

इस अनुभव ने मेरे भीतर एक नया हौसला भर दिया।

इसके बाद जब मेरी अगली तैनाती असम में हुई, तो भाषा की चुनौती ने एक बार फिर मेरा रास्ता रोका। लेकिन इस बार मैं पहले से ज़्यादा तैयार था। मैंने 'अनसुना करने' के बजाय 'सीखने' का विकल्प चुना।

असम में असमिया और बांग्ला दोनों भाषाओं का प्रभाव देखने को मिलता है। मैंने दैनिक कार्यालयी काम-काज के लिए दोनों भाषाओं के कुछ व्यावहारिक वाक्य सीख लिए:

- "आपको सर बुला रहे हैं"
- असमिया: আপোনাৰ সৰা মাতিছে। (आपोनाक सारे मातिछे।)
- बांग्ला: আপোনাৰ সৰা ডাকছে। (आपोनाके सारे डाकछेन।)
- "मैं राव बोल रहा हूँ"
- असमिया: মই বোলাই আছো। (मोइ राव कोई आछूँ।)
- बांग्ला: আমি বোলাইছি। (आमि राव बोलछि।)
- "यह फाइल कहाँ है?"
- असमिया: এই ফাইলটি কোথায় আছে? (ऐ फाइलटो कोत आछे?)
- बांग्ला: এই ফাইলটি কোথায় আছে? (ऐ फाइलटा कोथाय आछे?)

इन छोटे-छोटे वाक्यों और बातचीत के बलबूते मैंने बहुत ही कम समय में कामचलाऊ असमिया और बांग्ला सीख ली, जिससे मेरा दफ़्तरी काम और प्रवास बहुत आसान हो गया।

ज़रूरत ही भाषा की सबसे बड़ी शिक्षक है

अपनी ज़रूरतों और प्रयासों के बल पर मैंने तमिल और असमिया के अलावा मलयालम और कन्नड़ जैसी भाषाएँ भी कामचलाऊ स्तर पर सीख लीं।

आज जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो एक बात बहुत स्पष्ट लगती है—इंसान कोई भी भाषा तभी सच्चे मन से सीखता है जब उसे सच्ची ज़रूरत महसूस होती है। आज के इस आधुनिक युग में गूगल ट्रांसलेट, एआई और अनगिनत तकनीकी उपकरण आ चुके हैं, जिन्होंने भाषाओं के अनुवाद को बहुत आसान बना दिया है। लेकिन किसी अनजानी जगह पर रहकर, अपनी ज़रूरतों से संघर्ष करते हुए, ब्लैक एंड व्हाइट टी.वी. और विज्ञापनों के सहारे भाषा सीखने का जो आनंद और अपनापन उस दौर में मिला, उसकी तुलना आज की कोई भी आधुनिक तकनीक नहीं कर सकती।

उस एक अनजानी भाषा ने मुझे केवल बातें करना नहीं सिखाया, बल्कि मुझे पूरे भारत और उसकी समृद्ध संस्कृतियों से दिल से जोड़ दिया।



रिमझिम
स.श्रे.। (राजभाषा),
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

बेटियां हैं रौनक तो बेटे हैं संबल

बेटियां हैं लक्ष्मी
का स्वरूप अगर
तो बेटे भी शिव सा
संबल हैं।

प्रेम और करुणा में
सिर्फ बेटियां ही नहीं
बेटे भी उतने ही
अव्वल हैं।

बेटियों की पायल
रौनकें हैं तो
बेटों के जूते
पिता का बल।

बेटियां हैं घर की
मधुर मुस्कान
तो बेटे भी घर की
ढाल हैं।

बेटियां हैं आंगन की
चिड़ियों-सी चहकती
तो बेटे भी
उस आंगन की डाल हैं।

बेटियों के आँचल में
ममता का सागर
बेटों के सीने में
हिम्मत अपार है।

बेटी विदा होकर भी
रिश्ते निभाती है
बेटा पास रहकर भी
कब कम याद आता है?
दोनों की आँखों में
माँ का ही सपना
दोनों के मन में
पिता का सम्मान है।

बेटी बनती है
माँ की परछाईं
बेटा भी तो
पिता की पहचान है।

बेटियां रिश्तों को
स्नेह से सींचें
बेटे भी रिश्तों की
नींव सँभालते हैं।

बेटी घर की
खुशियों का उजाला
बेटा घर की
जिम्मेदारी का दीप है।

बेटी ममता की
कोमल-सी भाषा
बेटा भी प्रेम में
कहाँ अदीप है।

कंधों पर लेकर
घर की उम्मीदें
बेटा भी भीतर से
कभी-कभी पिघलता है।

एक में लक्ष्मी का
पावन रूप है
तो दूजे में शिव का
सुदृढ़ मन है।
बेटियां हैं सपनों की
उड़ती पतंगें
तो बेटे उन सपनों की
डोर हैं।

बेटियां हैं जीवन की
कोमल कविता
तो बेटे उस कविता का
छोर हैं।

न बेटी कम,
न बेटा अधिक
दोनों से ही
परिवार मुकम्मल है।

बस इतना-सा
संदेश रहे—
न कोई बड़ा,
न कोई छोटा।

बेटी हो या बेटा,
दोनों का होना
ईश्वर का दिया
सबसे सुंदर तोहफ़ा।



महवश फातिमा
सहायक श्रेणी II (तकनीकी),
आंचलिक कार्यालय, नॉएडा

जीवन जी के तो देखो

समय तो तुम बिता ही रहे हो,
पल तो यूँ ही लुटा ही रहे हो,
अब तो एक नयी शुरुआत कर ही लो,
मन की वो अनकही बात अब सुन ही लो,
ज्यादा नहीं तो सिर्फ थोड़ी ही सही,
थोड़ी सी मेहनत तो कर ही लो ।

सुन कर जब तुम वो आवाज़ अनकही,
स्वयं का लक्ष्य अब चुन ही लो,
अनुभव कर के तो देखो अपने जुनून को,
सजा के तो देखो अपने अभिमान को,
वादा करके तो देखो अपने सपनों से,
कि कभी न कभी तो सच करोगे ही उन्हें ।

क्यों कतराते हो तुम इतना खुद से,
क्यों डरते फिरते हो अपनी ही परछाई से,
ठान लो एक बार कि पूर्ण करोगे,
अपनी अधूरी अभिलाषा को,
अपनी अनदेखी भावनाओं को,
अपने अनकहे संवाद को ।

कहीं देर न हो जाये पहचानने में,
चेहरे के पीछे छिपे हुए चेहरे को,
विश्वास में थोड़ा संभल के तो देखो,
कुछ सुन के कुछ बोल के तो देखो,
अब तो सीख लो अपनी अज्ञानता से,
अब तो सुध बुध से काम तुम ले लो ।

धोखा खा के पेट नहीं भरा अगर,
तो ठोकर खा के ही तुम सो जाओ,
दिल तो कई बार अचंभित हुआ होगा,
आंसू भी अनेक बहे होंगे,
तो क्या विश्वास करना छोड़ दोगे?
किसी और के दिल को भी तोड़ दोगे?

कब से चलते ही जा रहे हो,
कहीं साए में थोड़ी देर बैठ के,
कुछ सोच के कुछ याद करके तो देखो,
मंजिल तक तो पहुँच ही जाओगे,
पहले उस रास्ते को जी भर के तो देखो,
एक बार न सही बार-बार तो देखो ।

चलो अब भूल भी जाओ वो सब कुछ,
जिसे याद करके तुम सदा रोते हो,
चलो अब वो सारे रहस्य खोल भी दो,
जिन्हें मन में दबाकर तुम रखते हो,
ये जीवन अनमोल है, एक साधन है,
इसे व्यर्थ में खर्च तो मत करो ।

जूझते तो रहना है हमेशा,
जीवित रहने के संघर्ष में,
जीवन जीने के लिए है,
इसे जी के तो देखो,
एक बार, हर बार,
इसे जी के तो देखो ।



अनुराग रंजन,
मंडल प्रबंधक,
वाराणसी



असर न पड़ता है वीरों पर,
रणभूमि परिणाम का ॥

गिरकर उठना, आगे बढ़ना,
काम यही है वीरों का ।

जो भी होता घटनाक्रम,
रचता स्वयं विधाता है।

कभी लगे जो दंड वही,
पुरस्कार बन जाता है ।

निश्चित होगा प्रबल समर्थन,
हर इक सत्य विचार का ।

असर न पड़ता है वीरों पर,
रणभूमि परिणाम का ॥

कर्मों का रोना रोने से,
दृढ़ता कभी न आती है।

विष धारण कर सकता जो,
अक्सर अमृत पीता है ।

करुणा का होना जीवन में,
इंशा को इंशा बनाता है।

संबल इक विश्वास ही है,
वीरों के आधार का।

असर न पड़ता है वीरों पर,
रणभूमि परिणाम का ॥



अंकित अग्रवाल ,
प्रबन्धक (लेखा),
मण्डल कार्यालय लखनऊ

Accounts यानी लेखा-जोखा का जीवन में महत्व



Accounts सिर्फ बही-खाता या CA का काम नहीं है। ये पैसों की भाषा है। और जिंदगी का 90% खेल पैसों से ही जुड़ा है। इसलिए Accounts समझना मतलब जिंदगी समझना। आज के आधुनिक युग में "Accounts" अर्थात् लेखा का महत्व बहुत बढ़ गया है। यह केवल व्यापार तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के दैनिक जीवन में भी इसकी आवश्यकता होती है। Accounts वह प्रणाली है जिसके माध्यम से आय, व्यय, लाभ, हानि तथा आर्थिक लेन-देन का सही रिकॉर्ड रखा जाता है। इससे व्यक्ति और संस्थाएँ अपनी आर्थिक स्थिति को समझ पाती हैं।

व्यापार के क्षेत्र में Accounts का विशेष महत्व है। किसी भी व्यवसाय की सफलता उसके सही लेखा-जोखा पर निर्भर करती है। Accounts की सहायता से व्यापारी यह जान पाता है कि उसे कितना लाभ हुआ या हानि हुई। इसके अलावा, कर (Tax) भुगतान, बैंक से ऋण प्राप्त करने तथा भविष्य की योजनाएँ बनाने में भी Accounts सहायक होता है।

व्यक्तिगत जीवन में भी Accounts बहुत उपयोगी है। यदि व्यक्ति अपनी आय और खर्च का हिसाब रखे, तो वह अनावश्यक खर्चों को कम कर सकता है और बचत बढ़ा सकता है। इससे आर्थिक समस्याओं से बचने में मदद मिलती है। आजकल लोग बजट बनाकर अपने खर्चों को नियंत्रित करते हैं, जो Accounts का ही एक रूप है। सरकारी और शैक्षणिक संस्थानों में भी Accounts का बड़ा योगदान है। सरकार देश की आय और व्यय का लेखा-जोखा रखती है, जिससे विकास कार्यों की योजना बनाई जाती है। विद्यालयों, अस्पतालों और अन्य संस्थाओं में भी Accounts व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने में सहायता करता है।

1. पर्सनल लाइफ में: जेब खाली क्यों होती है, पता चलता है

बिना Accounts के	Accounts के साथ
महीना खत्म, पैसा खत्म। पता नहीं कहाँ गया।	बजट बनाते हो: कमाई 50 हजार, खर्च 35 हजार, बचत 15 हजार।
EMI, क्रेडिट कार्ड में फंस जाते हो।	कर्ज पर नजर: कौन सा लोन पहले चुकाना है समझ आता है।
इमरजेंसी में दोस्तों से उधार मांगना पड़ता है।	इमरजेंसी फंड: 6 महीने का खर्च पहले से अलग रखते हो।
सीधा फायदा: टेंशन कम, नींद अच्छी। क्योंकि पैसा कहाँ से आया, कहाँ गया, इसका हिसाब है।	

2. करियर और बिजनेस में: मालिक बनो या नौकर, काम आएगा

किसी भी सरकारी या प्राइवेट नौकरी में सेल्स, मार्केटिंग, HR - हर डिपार्टमेंट में बजट होता है। अगर आपको Accounts आता है बैलेंस शीट बनानी आती है तो आपकी वैल्यू बढ़ती है। बॉस को लगता है कि बंदा "पैसे की अहमियत समझता है"। बिजनेस में: दुकान छोटी हो बड़ी या स्टार्टअप, अगर आमदनी अठन्नी खर्चा रुपैया है तो 6 महीने में शटर डाउन। अकाउंट्स बताता है कि कौन सा प्रोडक्ट घाटे में है, कहाँ पैसा बर्बाद हो रहा है। GST, इन्कम टैक्स आदि सरकार को कितना देना है, कितना बचा सकते हो, ये Accounts ही बताएगा। वरना नोटिस आते रहेंगे। उदाहरण: दो दोस्त समोसे का ठेला लगाते हैं। एक सिर्फ बेचता है। दूसरा रोज हिसाब लिखता है - तेल कितना लगा, गैस कितनी, हिसाब रखा तो विजन क्लियर बनता है, दो महीने बाद दूसरा वाला 3 और ठेले खोल लेता है, पहला वाला बंद कर देता है। फर्क Accounts का है।

3. देश और समाज में अकाउंट्स की मदद से घोटाले पकड़े जाते हैं:-

FCI, रेलवे, मनरेगा - हर सरकारी स्कीम में हजारों करोड़ लगते हैं। Accounts और ऑडिट नहीं होगा तो पैसा नेता-अफसर खा जाएंगे। सत्यम घोटाला, हर्षद मेहता स्कैम - ये सब Accounts की हेराफेरी से हुए और पकड़े भी Accounts से ही गए। इसलिए कहते हैं: Accounts लोकतंत्र का पहरेदार है।

4. अकाउंट्स आपकी सोच में बदलाव लाता है:-

अकाउंट्स अनुशासन लाता है रोज खर्च लिखोगे तो फालतू की शॉपिंग अपने आप बंद हो जाएगी। अकाउंट्स प्लानिंग लाता है 05 साल बाद घर लेना है तो आज कितना बचाना है, Accounts बता देगा। निर्णय: कार लोन पर लें या कैश में? Accounts से कैलकुलेट करके सही फैसला लोगे। शॉर्ट में याद रखो Accounts = पैसा + समय + निर्णय का हिसाब, जिसके पास इसका हिसाब नहीं, उसकी जिंदगी का हिसाब कोई और रखता है। आचार्य चाणक्य ने 2300 साल पहले अर्थशास्त्र में लिखा था: "कोष ही राजा की शक्ति है"। आज के लिए कह सकते हैं कि "हिसाब ही आदमी की शक्ति है"। वर्तमान समय में कंप्यूटर और डिजिटल तकनीक के कारण Accounts का कार्य और अधिक सरल तथा तेज हो गया है। कई सॉफ्टवेयर जैसे Tally, Excel आदि के माध्यम से लेखांकन आसानी से किया जा सकता है। इससे रोजगार के नए अवसर भी उत्पन्न हुए हैं।

अंत में कहा जा सकता है कि Accounts हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग है। यह आर्थिक अनुशासन, पारदर्शिता और भविष्य की सुरक्षा प्रदान करता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को Accounts का सामान्य ज्ञान अवश्य होना चाहिए। FCI के लिए तो अकाउंट्स रीढ़ की हड्डी की तरह है, इस संस्थान में प्रतिदिन करोड़ों का लेनदेन, किसानों को उनके खाते में 24 घंटे के अंदर भुगतान, केंद्र व राज्य सरकार के निकायों से वित्तीय लेनदेन आदि अकाउंट्स विभाग की वजह से ही द्रुत गति से संभव हो पाता है।



सुशांत कुमार,
स.श्रे.॥ (आगार),
मंडल कार्यालय, लखनऊ

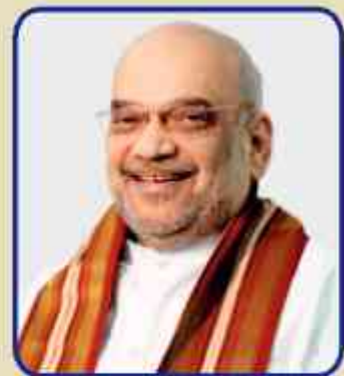


बारिश की बूंदें गिरें जब छत पर धीरे-धीरे,
लगे जैसे आकाश भी रो पड़ा पुरानी यादों से।
धूल भरी गली महक उठे, मिट्टी की सोंधी सुवास से,
और दिल के कोने भीग जाएँ किसी अनकहे संवाद से।

कहीं बच्चे कागज़ की नाव तैराएँ नालों में,
कहीं चाय की चुस्की संग खिड़की से झाँके कोई।
पीपल की पत्तियाँ नाचें हवा की थाप पर,
और मन के भीतर भी सावन का राग उठे कोई।

बारिश की बूंदें बस छूकर चली जाती हैं,
पर छोड़ जाती हैं भीगी-भीगी सी तसल्ली।
जैसे कहती हों—थकन मिटा लो, फिर चल पड़ो,
ज़िंदगी खुशनुमा हो जाएगी, यह थोड़ी-सी हलचल ही तो है।

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार



प्रिय देशवासियो,

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ!

भाषा चंदन की उस सुगंध के समान है, जो हमारी संस्कृति, संस्कार, ज्ञान, परंपरा और राष्ट्रीय चेतना की जीवंत धारा बन जाती है। भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में हमारी भाषाएँ, उपभाषाएँ और बोलियाँ हमारी सभ्यता की स्मृति, लोकजीवन की संवेदना और राष्ट्रीय एकता की आधारशिला हैं। स्वभाषा व्यक्ति को अपनी जड़ों से जोड़ती है और उसे आत्मविश्वास के साथ अपने विचारों, अनुभवों और आकांक्षाओं को अभिव्यक्त करने की शक्ति देती है।

हमारा भारत भाषाई विविधता और सांस्कृतिक समृद्धि की अनुपम भूमि है। यहाँ प्रत्येक भाषा अपने साथ एक इतिहास, लोकपरंपरा और जीवन-दृष्टि लेकर चलती है। यही भाषाई बहुलता भारत की 'विविधता में एकता' की भावना को सशक्त बनाती है। हिंदी ने इसी विविधता के बीच संवाद, संपर्क और समन्वय की भाषा के रूप में देश के विभिन्न क्षेत्रों, वर्गों और समुदायों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी का विकास भी तभी सार्थक है, जब वह सभी भारतीय भाषाओं के सम्मान, संरक्षण और संवर्धन के साथ आगे बढ़े। हिंदी किसी भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि भारतीय भाषाओं के बीच आत्मीय संवाद और राष्ट्रीय एकात्मता की महत्वपूर्ण कड़ी है।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' जी ने भाषा की वास्तविक शक्ति को जनता के जीवन और उसके सहज प्रयोग से जोड़ा था। उनका यह भाव हमें स्मरण कराता है कि कोई भी भाषा तभी जीवंत बनती है, जब वह समाज के सामान्य जन के श्रम, संवेदना, आकांक्षा और आत्मविश्वास की भाषा बने। हिंदी की शक्ति भी इसी लोक-संपर्क, सरलता, सहजता और व्यापक स्वीकार्यता में निहित है।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा के विचारों ने राष्ट्रीय चेतना को नई ऊर्जा दी। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने यह अनुभव किया था कि स्वभाषा और स्वाभिमान के बिना स्वराज की संकल्पना अधूरी रहेगी। हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं ने जन-जागरण, राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता के विचार को जन-जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिंदी ने देश के अनेक हिस्सों में स्वतंत्रता आंदोलन के विचारों, संदेशों और संकल्पों को सामान्य जन तक पहुँचाने की सशक्त संपर्क भाषा के रूप में कार्य किया।

यह वर्ष राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' के 150 वर्षों के स्मरण का भी विशेष अवसर है। आज जब देश 'विकसित भारत@2047' के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है, तब 'वंदे मातरम' का भाव हमें यह प्रेरणा देता है कि विकास की यात्रा अपनी विरासत, अपनी भाषाओं, अपनी स्वभाषा और अपने सांस्कृतिक आत्मविश्वास के साथ ही सार्थक होती है।

14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना स्वतंत्र भारत की लोकतांत्रिक और सांस्कृतिक यात्रा का महत्वपूर्ण क्षण था। यह निर्णय शासन को जनसामान्य के अधिक निकट लाने, लोक-संवाद को सशक्त करने और भारतीय भाषाओं के प्रति राष्ट्रीय सम्मान को अभिव्यक्त करने का प्रतीक था। हिंदी दिवस हमें इसी ऐतिहासिक संकल्प का स्मरण कराता है और राजभाषा हिंदी को जनसेवा, सुशासन और राष्ट्रीय संवाद का प्रभावी माध्यम बनाने की प्रेरणा देता है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में अमृतकाल का वर्तमान दौर भारत की सांस्कृतिक विरासत, सम्यक्तागत आत्मविश्वास और आधुनिक प्रगति के अद्भुत समन्वय का कालखंड है। प्रधानमंत्री जी का 'विकास भी, विरासत भी' का मंत्र हमें यह दिशा देता है कि आधुनिक भारत का निर्माण अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए ही सशक्त रूप से किया जा सकता है। गुलामी की मानसिकता से मुक्ति का अर्थ यह भी है कि हम अपनी भाषाओं में सोचने, काम करने, सृजन करने और विश्व से संवाद करने का आत्मविश्वास विकसित करें। इस दिशा में राजभाषा हिंदी की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।

इसी दृष्टि से राजभाषा विभाग द्वारा तकनीकी और संस्थागत स्तर पर अनेक महत्वपूर्ण पहलें की गई हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित 'भारती'; भारतीय भाषाओं के बीच संवाद को सहज बनाने की दिशा में एक दूरदर्शी प्रयास है। वर्ष 2024 में स्थापित 'भारतीय भाषा अनुभाग' केंद्र और राज्यों के बीच पत्राचार तथा प्रशासनिक संवाद को भारतीय भाषाओं में अधिक सुगम बना रहा है। इसी प्रकार, 8.27 लाख से अधिक प्रविष्टियों वाला 'हिंदी शब्द सिंधु' डिजिटल शब्दकोश हिंदी सहित भारतीय भाषाओं की शब्द-संपदा को जोड़ते हुए ज्ञान-साझाकरण का समृद्ध माध्यम बन रहा है। ये पहलें हिंदी को तकनीक, प्रशासन और ज्ञान-विनिमय की आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप और अधिक सक्षम बना रही हैं।

हिंदी दिवस केवल भाषा के प्रति गौरव व्यक्त करने का अवसर नहीं, बल्कि स्वभाषा में अपना कार्य, चिंतन और सृजन करने के लिए संकल्पित होने तथा संविधान-निर्माताओं के प्रति कृतज्ञ श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर भी है। आइए, इस पावन अवसर पर हम हिंदी और सभी भारतीय भाषाओं को विकसित, आत्मनिर्भर और सशक्त भारत की अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम बनाने का संकल्प लें।

आप सभी को पुनः हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ!

वंदे मातरम!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2026


(अमित शाह)



पायल अग्रवाल
सहायक श्रेणी तृतीय (राजभाषा),
मंडल कार्यालय, गोरखपुर।



"भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होती, वह विचारों की संस्कृति और समाज की आत्मा भी होती है।"

भारत की पहचान उसकी सांस्कृतिक विविधता में निहित है। यहाँ अनेक भाषाएँ, बोलियाँ और परंपराएँ मिलकर एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करती हैं जिसकी एकता उसकी विविधता में ही दिखाई देती है। इस बहुभाषी परिवेश में हिंदी को राजभाषा का दायित्व सौंपा गया है। यह दायित्व किसी भाषा को श्रेष्ठ सिद्ध करने का नहीं, बल्कि शासन और नागरिक के बीच संवाद को सहज, सरल और प्रभावी बनाने का है। जब प्रशासन की भाषा जनता की समझ के निकट होती है, तब शासन अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी और जनोन्मुखी बनता है।

समय के साथ राजभाषा का स्वरूप भी बदलता गया है। एक समय था जब हिंदी में सरकारी कार्य करना कठिन माना जाता था, क्योंकि संसाधन सीमित थे। आज वही हिंदी आधुनिक तकनीक के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है। यूनिकोड, ई-ऑफिस, डिजिटल अभिलेख, ऑनलाइन शब्दकोश और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे उपकरणों ने हिंदी में कार्य करना पहले से कहीं अधिक सरल और सुविधाजनक बना दिया है। अब आवश्यकता केवल तकनीकी साधनों की नहीं, बल्कि भाषा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और आत्मविश्वास की है।

भारतीय खाद्य निगम जैसे विशाल सार्वजनिक उपक्रम में राजभाषा की भूमिका विशेष महत्व रखती है। यह संस्था केवल खाद्यान्नों के भंडारण और वितरण तक सीमित नहीं है, बल्कि देश की खाद्य सुरक्षा व्यवस्था की एक

मजबूत कड़ी है। यहाँ प्रतिदिन अनेक प्रकार के प्रशासनिक निर्णय, पत्राचार, प्रतिवेदन और सूचनाएँ तैयार होती हैं। यदि इन कार्यों में हिंदी का सहज और प्रभावी प्रयोग हो, तो कार्यालय के भीतर कार्यकुशलता बढ़ती है और कर्मचारियों के बीच संवाद भी अधिक स्पष्ट और सरल बनता है। भाषा तब केवल औपचारिकता नहीं रहती, बल्कि कार्यसंस्कृति का अभिन्न हिस्सा बन जाती है।

राजभाषा का वास्तविक विकास आदेशों से नहीं, बल्कि व्यवहार से होता है। जब अधिकारी स्वयं हिंदी में नोटिंग लिखते हैं, कर्मचारी पत्राचार में हिंदी का प्रयोग करते हैं और बैठकों में सहजता से हिंदी में विचार व्यक्त किए जाते हैं, तभी राजभाषा अपने उद्देश्य को प्राप्त करती है। भाषा का सम्मान उसके प्रयोग से बढ़ता है, केवल उसके प्रचार से नहीं। इसलिए प्रत्येक कर्मचारी की छोटी-सी पहल भी राजभाषा आंदोलन को नई ऊर्जा प्रदान करती है।

राजभाषा के विकास में गृह-पत्रिकाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। वे केवल रचनाओं का संग्रह नहीं होतीं, बल्कि किसी संस्था की जीवंत स्मृतियाँ, अनुभव और रचनात्मक चेतना का दर्पण होती हैं। ऐसी पत्रिकाएँ कर्मचारियों को अपनी भाषा में सोचने, लिखने और सृजन करने का अवसर देती हैं। कार्यालय की उपलब्धियाँ, नवीन प्रयोग, साहित्य, संस्कृति और मानवीय संवेदनाएँ जब एक ही मंच पर स्थान पाती हैं, तब संगठन केवल कार्यस्थल नहीं, बल्कि एक सृजनशील परिवार का रूप ले लेता है।

आज जब दुनिया तेजी से डिजिटल हो रही है, तब यह आवश्यक है कि हम हिंदी को भी आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और तकनीक की भाषा के रूप में विकसित करें। सरल, सहज और व्यवहारिक हिंदी ही वह माध्यम बन सकती है जो प्रशासन और आम नागरिक के बीच की दूरी को कम करे। साथ ही, भारत की सभी भाषाओं के सम्मान और सहयोग की भावना के साथ हिंदी का विकास ही हमारी लोकतांत्रिक संस्कृति की वास्तविक पहचान है। राजभाषा का उद्देश्य किसी भाषा का स्थान लेना नहीं, बल्कि भाषाई समन्वय के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करना है।

अंततः राजभाषा हिंदी केवल कार्यालय की भाषा नहीं, बल्कि विश्वास, सहभागिता और सुशासन की भाषा है। जब भाषा सरल होगी, संवाद सहज होगा; जब संवाद सहज होगा, तो प्रशासन अधिक प्रभावी होगा। यही राजभाषा का वास्तविक उद्देश्य है और यही एक सशक्त, संवेदनशील तथा जनहितैषी प्रशासन की पहचान भी।



शुभम यादव,
स.श्रे.॥ (तक.),
क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ

अन्न का रोमांचः

खेत की मिट्टी से जुबान की तृप्ति तक का महासंग्राम

अन्न
समृद्धि का आधार
स्वस्थ भारत
का संकल्प



दुनिया में कई रोमांचक यात्राएं सुनी होंगी; एवरेस्ट की चढ़ाई, चांद का सफर या समंदर की गहराइयां। लेकिन क्या आपने कभी उस 'गेहूं के दाने' की यात्रा को बारीकी से देखा है जो आपकी थाली में 'फुलका' बनकर मुस्कुराता है? यह सफर किसी हॉलीवुड थ्रिलर से कम नहीं है, जिसमें पसीना 'मिर्जापुर' जैसा खौफनाक बहता है और सुकून 'पंचायत' जैसा सादा मिलता है।

कहानी शुरू होती है गाँव की उस सरहद पर जहाँ सूरज भी उगने से पहले इजाजत मांगता है। यहाँ का नायक है धनीराम किसान। धनीराम के लिए उसका खेत कोई ज़मीन का टुकड़ा नहीं, उसका 'साम्राज्य' है। जब वह हल जोतता है, तो उसके चेहरे पर वही तेवर होते हैं जो मिर्जापुर में गद्दी पर बैठते वक्त होते हैं।

जेठ की दुपहरी में जब लू चलती है, तो धनीराम पसीना पोंछते हुए अपने बेटे से कहता है— "देख रहे हो न बिनोद, ये जो आसमान आग उगल रहा है न, इसी आग में तपकर ये दाना कुंदन बनेगा।" बीज बोते वक्त वह मिट्टी से ऐसे बात करता है मानो कह रहा हो; "अटैक चाहे जिधर से भी हो, ई फसल को हम बर्बाद नहीं होने देंगे।" रात-रात भर जागकर पानी लगाना, आवारा पशुओं से लड़ना और खाद-पानी का हिसाब रखना... धनीराम का संघर्ष ऐसा है कि खाद की बोरी महंगी मिलने पर वह प्रधान जी से कह देता है— "गजब बेइज्जती है पार, किसान के पसीने की कोई कीमत ही नहीं है?"

जब यह अनाज बोरियों में बंद होकर घर की दहलीज पर कदम रखता है, तो यहाँ की कमान संभालती है सुमन भाभी। सुमन के लिए रसोई उसकी 'पंचायत' है और वह यहाँ की निर्विरोध प्रधान है।

अनाज को साफ करना, उसे धूप दिखाना और फिर चक्की तक ले जाना, यह किसी मिशन इंपॉसिबल से कम नहीं। जब वह आटा गूंथती है, तो उसकी कलाइयों की ताकत उस आटे को लोच देती है। तवे पर जब रोटी फूलती है, तो उसकी खुशबू पूरे मोहल्ले को बता देती है कि 'असली घी' का तड़का लगने वाला है। अगर पति देव खाने में ज़रा भी मीन-मेख निकाल दें, तो सुमन भाभी तिरछी नज़र से देखती हैं और उनका मौन संवाद होता है—

"इज्जत कीजिए हमारी, वरना अगली बार से खुद ही बेल लीजिएगा।" उनकी हर रोटि में ममता का वो 'सीक्रेट मसाला' होता है जो दुनिया का कोई फाइव स्टार शेफ नहीं दे सकता।

अब इस रोमांच का तीसरा पड़ाव है शहर का एक आलीशान ऑफिस, जहाँ ऐसी की ठंडी हवाओं के बीच 'मिश्रा जी' और 'शर्मा जी' अपनी फाइलों से ज़्यादा लंच ब्रेक का इंतज़ार करते हैं।

मिश्रा जी, जो खुद को ऑफिस का 'गुड्डू भैया' समझते हैं, टिफिन खुलते ही बाकी कलीग्म पर ऐसे झपटते हैं मानो कह रहे हों— "हमको भी चाहिए, पूरा टिफिन ही हम खाएंगे।" ऑफिस की डेस्क पर जब घर की बनी रोटियां और अचार निकलता है, तो वहाँ एक अजीब सा 'व्यंग्य' जन्म लेता है। लोग डाइट चार्ट की बातें करते हैं, कैलोरी गिनते हैं, लेकिन जैसे ही ताज़ी रोटि के साथ दाल-मखनी का मेल होता है, सारा ज्ञान धरा का धरा रह जाता है।

छोटे-छोटे केबिन में बैठा स्टाफ अब 'ज़्यादा खाना' ही अपना मुख्य काम समझ चुका है। काम की फाइल पर सब्जी का दाग लग जाए तो शर्मा जी कहते हैं— "अरे मिश्रा जी, ये काम-धाम तो सब मोह-माया है, असली सुख तो इसी परांठे में है।" यहाँ स्वाद और सेहत की ऐसी लड़ाई चलती है कि अंत में जीत 'पेट' की ही होती है।

अन्न का वह दाना, जो धनीराम के पसीने से सींचा गया, सुमन भाभी की आंच पर पका और मिश्रा जी के टिफिन तक पहुँचा, अब अपने अंतिम मुकाम यानी 'जुबान' पर है।

जैसे ही वह निवाला मुंह में जाता है, एक महा-विस्फोट होता है। लार ग्रंथियां सक्रिय होती हैं, दिमाग को डोपामाइन का सिग्नल मिलता है और पूरा शरीर एक बारगी बोल पड़ता है "अतुलनीय, अविश्वसनीय, और एकदम कड़क!" यह वह पल है जहाँ किसान की कमर का दर्द, गृहणी के पसीने की बूंद और दफ्तर की थकान... सब धुल जाते हैं।

दांतों के बीच पिसता हुआ वह अन्न का दाना मुस्कुराकर कहता है; "हम यहाँ पहुँचने के लिए बहुत कड़े रास्तों से आए हैं, अब बस तृप्ति का आनंद लो।"

तो अगली बार जब आप थाली के सामने बैठें, तो याद रखिएगा कि वह एक निवाला महज़ खाना नहीं है; वह धनीराम की 'मिर्जापुर' वाली जिद है, सुमन भाभी की 'पंचायत' वाली सादगी है और मिट्टी का वो आशीर्वाद है जो आपको ज़िंदा रखता है।

अन्न का अपमान करना मतलब उन करोड़ों पसीनों का अपमान करना है। इसलिए, प्लेट में उतना ही लें जितना खा सकें। क्योंकि जैसा कि पंचायत में कहा गया; "देख रहे हो न बिनोद, अन्न की एक-एक बूंद के लिए कितनी मेहनत लगती है।"

खेत की मिट्टी से थाली तक पहुँचने वाला हर दाना किसान के पसीने, गृहणी की मेहनत और उपभोक्ता की तृप्ति का संगम है। यह यात्रा हमें सिखाती है कि भोजन केवल स्वाद नहीं, बल्कि संघर्ष और संस्कार का परिणाम है। इसलिए अन्न का सम्मान करना और भोजन की बर्बादी रोकना हमारा नैतिक दायित्व है।



चंदन कुमार मिश्रा,
प्रबंधक (तक),
मंडल कार्यालय, गोरखपुर

नीड़ से नभ तक

मुक्त गगन की नन्ही चिड़िया,
सारा जग को अपना कहती थी।
हर डाली को सखा समझकर,
निर्भय होकर रहती थी ॥

एक दिवस जब लगी गुल्ल,
टूट गया विश्वास वह सारा।
डाली-डाली भटकी फिर एक,
डर ने मन में लिया सहारा ॥

ठहर न पाती एक पल भी,
पल-पल अपना ठोर बदलती।
पंख थरथर, आँखें चंचल,
हर आहट पर डाल बदलती ॥

जान न पाई हेतु चोट का,
डाली नहीं, शिकारी था।
मन में वह भय संजोए,
जीवन सारा भारी था ॥

जग में ऐसे लोग हैं जिनके,
मुख पर है मधुर मुस्कान।
साधे लक्ष्य और कहीं पर,
बेध देते हैं, कोई और इंसान ॥

भय की बेड़ी से बाँध निज को
जीवन कब तक जी पाएगा?
जो हर छाया से डर जाएगा,
वह मंज़िल कैसे पाएगा?
एक दिवस फिर साहस जागा,
खोया अपना विश्वास समेटा,
नव जीवन में अपने को पाकर
हर डाली में अपनापन पाया ॥

जिसने पंख पसार नभ में,
नई उमंग के गीत है गायी।
जीवन का सुख दुख को उसने,
सम्यक भाव से हे जी पाई ॥



दीप्ति श्रीवास्तव
स.श्रे.॥ (तक.),
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

जीवन का मौन

जीवन,
कभी किसी से पूछकर
आगे नहीं बढ़ता।

वह बस
धीरे-धीरे
हमारे भीतर और
हमारे आसपास
बहता रहता है,
बदलता रहता है।

हरदम साथ
रहने वाले अपने छूटते हैं,
कुछ नए जुड़ते हैं..
सफलताओं के सावन
आते हैं,
संघर्षों के पतझड़ भी।

कुछ इच्छाएँ
समय की धूल में दब जाती हैं,
और कुछ क्षण,
अनुभव बनकर रह जाते हैं।

धीरे-धीरे ये अनुभव
स्मृति बनते हैं,
स्मृति आदत,
और आदत
जीवन का हिस्सा।

फिर एक दिन
पीछे मुड़कर देखते हैं
तो समझ आता है—
जिस पीड़ा ने
कभी साँस रोक दी थी,
वह भी
समय के आगे
छोटी पड़ गई।

शायद इसलिए
जीवन का अर्थ
पकड़कर रखने में नहीं,
छोड़ते जाने में है
छूटते जाने में है..।

क्योंकि इस संसार में
कुछ भी ठहरता नहीं—
ऋतुएँ नहीं,

संबंध नहीं,
हम स्वयं भी नहीं।

बस समय है
जो निरंतर बहता रहता है,
और जीवन है
जो हर ठोकर के
बाद भी..
चलता रहता है।

ये स्वीकार करना ही
सबसे कठिन साधना है,
और आगे बढ़ जाना
मनुष्य की सबसे पुरानी नियति।

यक़ीनन हम सब
बस यात्राएँ हैं,
जो थोड़ी देर
एक-दूसरे के साथ चलती हैं,
फिर समय के विशाल मौन में
आगे निकल जाती हैं।



सुमित्रा शाह,
स. श्रे. III (सा०),
मंडल कार्यालय गोरखपुर



चेहरे पर मुस्कान रहती है,
लोग कहते हैं—“सरकारी नौकरी है,
ज़िंदगी तो बड़ी आसान रहती है।”

पर कौन देखता है,
उस मुस्कान के पीछे छिपी
ज़िम्मेदारियों की लंबी कतार,
हर दिन का मानसिक भार,
और हर फैसले का अदृश्य प्रहार।

सुबह घर से निकलता है,
अपने ही सपनों को दराज़ में बंद करके,
किसी और की उम्मीदों का बोझ
अपने कंधों पर धरकर।

फ़ाइलों में सिर्फ़ कागज़ नहीं होते,
किसी किसान की उम्मीद होती है,
किसी बुजुर्ग की पेंशन,
किसी छात्र का भविष्य,
किसी परिवार की आखिरी आस होती है।

गलती हो जाए तो दोष उसी का,
काम सही हो जाए तो श्रेय किसी और का।
प्रशंसा अक्सर ख़ामोश रहती है,
शिकायतें हमेशा ऊँची आवाज़ में आती हैं।

जनता की नाराज़गी भी वही झेले,
व्यवस्था की कमियाँ भी वही सहे।
न नियम अपने,

न फैसले अपने,
फिर भी हर सवाल का जवाब
उसी से माँगा जाए।

त्योहारों पर भी ड्यूटी,
बारिश में भी ड्यूटी,
धूप की तपिश में भी ड्यूटी,
आपदा हो या चुनाव,
सबसे पहले वही पुकारा जाए।

घर लौटे तो बच्चों की आँखों में
दिनभर की अनुपस्थिति का सवाल होता है।
माँ-बाप की दवाइयों का हिसाब,
जीवनसाथी की अधूरी बातें,
और अपने हिस्से का थका हुआ ख़ामोश
खयाल होता है।

लोग समझते हैं—
सरकारी नौकरी मतलब सुरक्षा।
पर कोई नहीं समझता,
कि हर दिन
ईमानदारी बचाना भी
एक संघर्ष होता है।

मुस्कुराहट उसकी मजबूरी भी है,
और वर्दी या पहचान की गरिमा भी।
क्योंकि आँसू अगर आँखों तक आ जाएँ,
तो लोग कहेंगे—

“इतनी अच्छी नौकरी में भी क्या कमी है?”

सच तो यह है,
हर सरकारी कर्मचारी
सिर्फ़ तनख्वाह नहीं कमाता,
वह व्यवस्था का बोझ,
समाज की उम्मीदें,
और अपने परिवार के अधूरे पल
एक साथ ढोता है।

इसलिए अगली बार
जब किसी सरकारी कर्मचारी के चेहरे
पर
मुस्कान देखो,
तो यह मत समझ लेना
कि उसकी ज़िंदगी आसान है।

हो सकता है—
वह मुस्कुरा इसलिए रहा हो,
ताकि उसके भीतर की थकान,
टूटन और संघर्ष
किसी की नज़रों में न आ जाए।

क्योंकि हर मुस्कुराता चेहरा खुश नहीं होता,
और हर सरकारी कर्मचारी सिर्फ़
“सरकारी” नहीं होता—
वह भी एक इंसान होता है।



रिनी जोशी,
सहायक श्रेणी - II,
क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली



जब हम अपने घरों में निश्चित होकर सो जाते हैं,
तब भी एफसीआई अपने कर्तव्य निभाते हैं।
समानता, सुलभता और सबका सम्मान,
राष्ट्र की खाद्य सुरक्षा ही है इसकी पहचान।
हर परिस्थिति में सेवा को तत्पर रहते हैं,
देश के विश्वास पर सदैव खरे उत्तरते हैं।

पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, उत्तर-पूर्व का संग,
एक सूत्र में बंधा हमारा कर्म और उमंग।
अनेक विभाग, अनेक दायित्व, उद्देश्य एक महान,
हर कार्य में झलकला है सेवा का अभियान।
गुणवत्ता, अनुबंध, सूचना प्रौद्योगिकी का साथ,
अभियांत्रिकी, वित्त, क्रय-प्रगति की हर बात।
भंडार, विधि, सतर्कता, राजभाषा का मान,
कार्मिक, औद्योगिक संबंध-सबका एक सम्मान।
भंडारण, वितरण, गुणवत्ता, आवागमन और विक्रय,
हर जिम्मेदारी निभाकर बढ़ाते राष्ट्र का वैभव नित्य।

हमारा लक्ष्य, हमारा प्रण, हमारा अभिमान,
भारतीय खाद्य निगम देश की सच्ची पहचान।
पारदर्शिता के सर्वोच्च मानक अपनाते हैं,
हर संसाधन का सदुपयोग कर आगे बढ़ जाते हैं।
तकनीक, नवाचार और श्रम का सुंदर मेल,
भूख और कुपोषण मिटाना ही हमारा खेल नहीं-
हमारा संकल्प अविरल, अटूट और अविचल है।

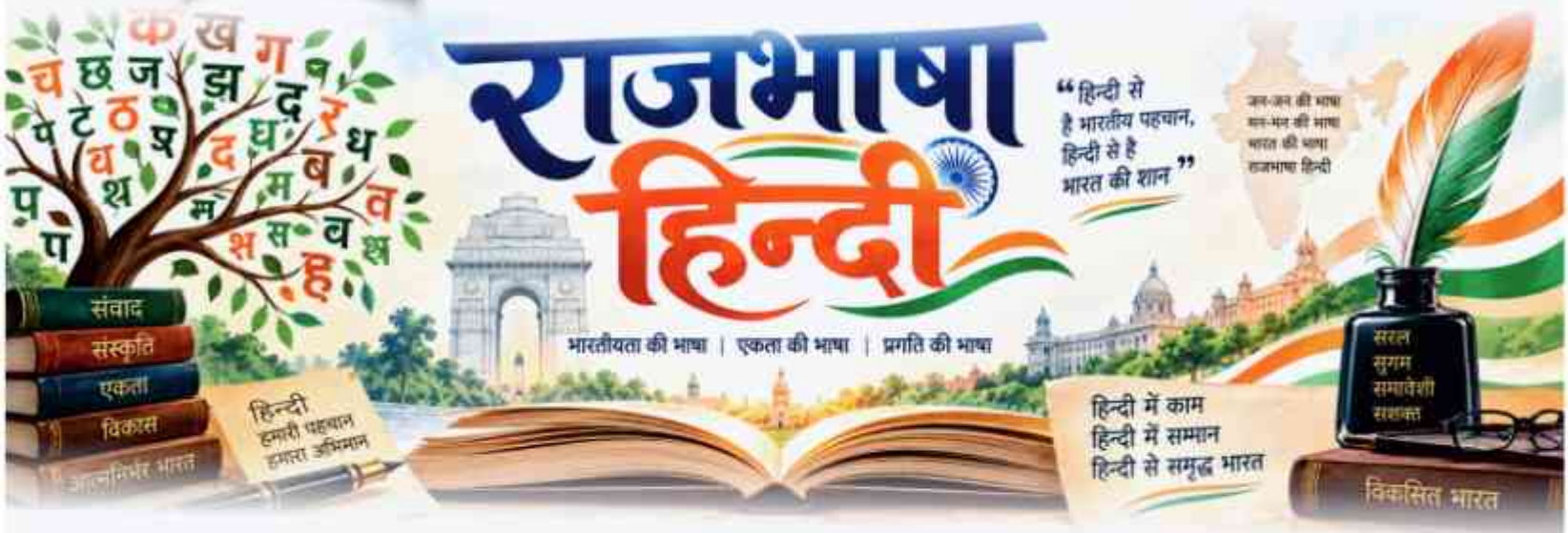
"वसुधैव कुटुम्बकम्" का संदेश अपनाकर,
खाद्य निगम अधिनियम 1964 को आधार बनाकर।
विश्व खाद्य कार्यक्रम (UN World Food Programme)
संग बढ़ाया है हाथ,
वैश्विक भूख मिटाने का चुना मानवता का पथ।
ज़रूरतमंदों तक खाद्यान्न पहुँचाना हमारा धर्म महान,
पोषण और सुरक्षा देना ही हमारा अभियान।

हमारे श्रम, समर्पण और सफलता का है प्रमाण,
अन्नपूर्णा, पोषण, टीपीडीएस का बढ़ता सम्मान।
फोटोफाइड चावल, गेहूँ आधारित पोषण का विस्तार,
प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना का सशक्त आधार।
अन्नदाता किसान के श्रम को देते हैं सम्मान,
हर वंचित तक पहुँचाते हैं सुविधा और स्वाभिमान।

आओ मिलकर ऐसा भारत करें साकार,
जहाँ हर थाली में अन्न हो, हर चेहरे पर हो मुस्कान अपार।
खाद्य सुरक्षा सबके लिए यही हमारा सपना,
यही हमारा कर्तव्य, यही राष्ट्र का अपना।



अनूप महर्षि,
स.श्रे. III (राजभाषा),
मंडल कार्यालय हिसार



हिन्दी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है, यह करीब 11वीं शताब्दी से ही राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित रही है। उस समय भले ही राजकीय कार्य संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी में होते रहे हों, परन्तु सम्पूर्ण राष्ट्र में आपसी सम्पर्क, संवाद-संचार, विचार-विमर्श, जीवन-व्यवहार का माध्यम हिन्दी ही रही है। चाहे वो पत्रकारिता, स्वाधीनता संग्राम का क्षेत्र क्यों न हो हर जगह हिन्दी ही जनता के विचार-विनिमय का साधन बनी है।

अतीत के महापुरुषों जैसे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा गाँधी ने राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से ही सम्पूर्ण राष्ट्र से सम्पर्क किया और सफलता हासिल की इसी के कारण आजादी के पश्चात संविधान-सभा द्वारा बहुमत से 'हिन्दी' को राजभाषा का दर्जा देने का निर्णय किया था।

जैसे जैसे भाषा का विस्तार क्षेत्र बढ़ता जाता है वो भाषा उतने ही अलग-अलग रूप में विकसित होना शुरू होती जाती है, यही हाल हिंदी भाषा के साथ हुआ क्योंकि यह भाषा पहले केवल बोलचाल की भाषा में ही सीमित थी। उसके बाद साहित्यिक भाषा के क्षेत्र में इसका विकास हुआ फिर समाचार-पत्रों में 'पत्रकारिता हिन्दी' का विकास हुआ 'खेलकूद की हिन्दी', 'बाजार की हिन्दी' भी सामने आई।

सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा होने के बावजूद हिन्दी को आज भी संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त नहीं है, जबकि इससे कहीं कम बोली जाने वाली अरबी और फ्रेंच भाषाओं को यह सम्मान हासिल है।

ऐसा क्यों? शायद हमने ही हिन्दी को वो सम्मान और स्थान नहीं दिया जो उसे दिया जाना चाहिए तो फिर दुसरो से कैसे समर्थन की उम्मीद रखे। यदि हम चाहते हैं कि हिंदी भाषा का सम्मान और स्थान बना रहे तो हमें अंग्रेजी की तरफ ज्यादा आकर्षित न होकर हिंदी को उसका सम्मान दिलाने का प्रयास करना चाहिए तभी हम हिंदी भाषा को आने वाले समय में राजभाषा का जो दर्जा प्राप्त है उसे निरंतर रख पाएंगे।



अभिषेक गौतम
प्रबंधक (आगार),
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

खामोश हो क्यों?

खामोश हो तुम, क्या कोई बात है,
ये दुःख-सुख तो जीवन की सौगात है।

इन चाहतों की आदत जो लगा दी है तुमने,
ये मायूसी उस आदत पर एक आघात है।

क्यों कहा, क्यों किया-इस पहेली को क्यों बुनते हैं,
आओ. यादों की किताब से कुछ मीठे पन्ने चुनते हैं।

मौका है. दस्तूर है और ये रात भी पड़ी है,
आओ साथ बैठें, करें नई शुरुआत कहीं।

कुछ तुम सुनाओ, कुछ मैं सुनूँगा,
मन न हो बातों का, तो बातें मैं ही बुनूँगा।

हल न निकले मुश्किल का, तो मजाक ही कर लेना,
बैठना गवारा न हो, तो सैर पर चल ही पड़ना।

अभी तो बहुत है सुनना, बहुत कुछ है देखना,
खामोश न रहो, जो भी मन में हो, जरूर है कहना।

अरे, देखो तो बाहर पहाड़ों पर कैसे बादल आ गए,
थोड़ा बैठो साथ, देखो-बिन मौसम कैसे पते मुरझा गए।

मुरझाए पत्तों से हुई क्षति का गम कभी न करना,
देखो, बादलों के आने से फिर इन पेड़ों को है फलना।

आओ देखो, हुई शाम, पंछी घर को जाते हैं,
आओ अपना पुराना वाला गीत साथ गुनगुनाते हैं।

एक अनकही कहानी है मेरे दिल में दबी हुई
जब सुनना चाहो, बता देना-मैं हूँ साथ यहीं।

छोड़ो पुरानी तकरारें, आओ एक नई कहानी बुनते हैं,
इसका अंत हम लिखेंगे, इसे नियति पर नहीं छोड़ते हैं।



अभिषेक कुमार,
सहायक श्रेणी III (तकनीकी),
मंडल कार्यालय, बरेली

कहण की आबरू

जो सच्ची बात है वो हू-ब-हू रखनी पड़ेगी
मुझे अपनी कहन की आबरू रखनी पड़ेगी

बियाबाँ में सदा की जुस्तुजू रखनी पड़ेगी
हमें आवाज़ अपनी कू-ब-कू रखनी पड़ेगी

न सोचा था ये दिन भी देखना मुझको पड़ेगा
खुदा के सामने भी आरजू रखनी पड़ेगी

सुना है सुनने में इनका कोई सानी नहीं है
सो दीवारों से जारी गुफ्तुगू रखनी पड़ेगी

कभी सोचा है तुम कैसे मिला पाओगे नज़रें
जब अपनी शकल अपने रू-ब-रू रखनी पड़ेगी

न बस तारीफ़ से किरदार महकेगा तुम्हारा
तुम्हें फूलों के जैसी रंगो-बू रखनी पड़ेगी



संतोष कुमार कनौजिया
सहायक महाप्रबंधक (लेखा),
आंचलिक कार्यालय (उ.), नोएडा

भारत की साहसिक पहल: विश्व का सबसे बड़ा अनाज भंडारण योजना



भारत, जो विश्व की लगभग पाँचवीं जनसंख्या को भोजन उपलब्ध कराता है, एक विरोधाभास का सामना करता है। विश्व की कुल कृषि योग्य भूमि का केवल 11% (16 करोड़ हेक्टेयर) भारत के पास है, जबकि इसे 18% (140 करोड़ लोग) की जनसंख्या का पोषण करना होता है। FAO के 2021 आँकड़ों के अनुसार, भारत हर साल लगभग 311 MMT खाद्यान्न का उत्पादन करता है, लेकिन भंडारण क्षमता केवल 145 MMT है। यानी 166 MMT की कमी है। अन्य देशों में भंडारण क्षमता अधिशेष है (131%), जबकि भारत में 53% यह असंतुलन लंबे समय से भारत की खाद्य सुरक्षा को प्रभावित करता रहा है। खुले में रखा अनाज सड़ जाता है, सरकारी एजेंसियाँ लॉजिस्टिक्स से जूझती हैं और किसानों को उचित मूल्य नहीं मिलता। इसी चुनौती को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मई 2023 में एक ऐतिहासिक पहल शुरू की—विश्व का सबसे बड़ा अनाज भंडारण योजना (World's Largest Grain Storage Plan in Cooperative Sector)। "सहकार से समृद्धि" के विज्ञान पर आधारित यह योजना गाँव स्तर पर सहकारी समितियों को आधुनिक कृषि व्यवसाय केंद्रों में बदलने का लक्ष्य रखती है।

भारत बनाम विश्व भंडारण क्षमता (India vs World Storage Capacity)

Production (उत्पादन)	Storage (भंडारण)	Shortfall (कमी)	Other Countries Surplus (अन्य देशों का अधिशेष)	India Storage Deficit (भारत की भंडारण कमी)
311 MMT	145 MMT	166 MMT	131%	53%

सहकारिता की ताकत

इस योजना का केंद्र हैं Primary Agricultural Credit Societies (PACS)। अब PACS केवल ऋण देने वाली संस्था नहीं रहेंगी, बल्कि इन्हें मल्टी सर्विस सेंटर के रूप में विकसित किया जाएगा। यहाँ स्थानीय स्तर पर godowns, cold storage, packhouses, custom hiring centers और Fair Price Shops बनाए जाएँगे। इससे किसान अपने अनाज को गाँव में ही सुरक्षित रख पाएँगे, परिवहन लागत घटेगी और कटाई के बाद होने वाले नुकसान कम होंगे।

योजना केवल ढाँचे तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सहकारिता को सशक्त बनाने की दिशा में है। PACS godowns के लिए सब्सिडी बढ़ाकर 33% कर दी गई है, NABARD के माध्यम से लगभग शून्य ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध होगा और निर्माण लागत मानक भी संशोधित किए गए हैं।

प्रमुख एजेंसियाँ

- Ministry of Cooperation – नोडल मंत्रालय
- NCDC (National Cooperative Development Corporation) – प्रमुख कार्यान्वयन एजेंसी
- NABARD & NABCONS – वित्तीय और परामर्श सहयोग
- CWC (Central Warehousing Corporation) – तकनीकी सहयोग
- NBCC (India) Ltd. – इंफ्रास्ट्रक्चर परामर्श
- State Cooperative Departments & DCDC – स्थानीय स्तर पर निगरानी

सबसे महत्वपूर्ण भागीदार है FCI (Food Corporation of India)। FCI ने मंत्रालय के साथ MoU पर हस्ताक्षर कर PACS godowns के लिए 9 वर्षों तक समान hiring assurance दिया है। इससे यह सुनिश्चित होगा कि godowns खाली न रहें और इन्हें राष्ट्रीय खाद्यान्न खरीद और वितरण प्रणाली से जोड़ा जा सके।

क्यों है यह योजना अहम

यह योजना केवल लॉजिस्टिक सुधार नहीं है, बल्कि एक संरचनात्मक सुधार है। इससे भंडारण क्षमता बढ़ेगी, अनाज की बर्बादी घटेगी, कीमतें स्थिर होंगी और किसानों को बेहतर मूल्य मिलेगा। ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा होंगे और सहकारी समितियाँ आधुनिक व्यवसायिक संस्थाओं में बदलेंगी।

असल में, भारत केवल godowns नहीं बना रहा है, बल्कि विश्वास बना रहा है। विश्वास कि खेतों में उगाया गया हर दाना सुरक्षित रहेगा और हर ज़रूरतमंद तक पहुँचेगा। विश्वास कि आधुनिक सहकारिता भारत की खाद्य सुरक्षा की रीढ़ बन सकती है।

“विश्व का सबसे बड़ा अनाज भंडारण योजना सहकारिता सशक्तिकरण का साहसिक प्रयोग है। यदि इसे अनुशासन और दक्षता से लागू किया गया, तो यह भारत की खाद्य अर्थव्यवस्था को पुनर्परिभाषित कर सकता है और वैश्विक मानक स्थापित कर सकता है। यह याद दिलाता है कि भारत जैसे देश में, जहाँ हर दाना मायने रखता है, भंडारण केवल ढाँचा नहीं है—यह समृद्धि का वादा है।”



अलका कुमारी,
स.श्रे. III (तक.), मं.का.
वाराणसी



मैं खुद को अधूरा करती जाती हूँ,
एक पुत्री से स्त्री तक के सफर में,
एक अधूरा-पूर्ण सा बनती जाती हूँ,
मैं खुद को अधूरा करती जाती हूँ।

जिसकी वास्तविकता अब सत्य नहीं रही,
एक दर्पण-सी खुद को बार-बार देखती हूँ।
मैं खुद को अपने अंतरंग में खोजती हूँ,
पर खुद को अधूरा ही पाती हूँ।

क्या शायद ! तब मैं पूरी थी,
जब किसी रिश्तों में ना बंधी थी,
वो गैर जिम्मेदाराना तो था,
पर एक बेफिक्र भी थी।

कुछ कह देने की, कुछ सुन लेने की,
एक पिता के बाँहों में खुद को उकेर देने की।

अब जैसे किसी किताब के आखिरी पृष्ठ पर हूँ,
कि पिछले पन्नों को न खोलने के ख्याल से,
अब वो हाथ ही नहीं मिलते जहाँ फिर पुत्री बन जाऊँ,
अपनी ज़िद और मनमानियों पर फिर से हक जताऊँ।

पुरानी किताबों को बार-बार पढ़ने की ख्वाहिश में,
नई किताबों का ढेर लगा बैठी हूँ।

अब इच्छाएं थक थक चुकी हैं, अपनी सीमितताओं से,
ख्वाहिशें पुराने कपड़ों सी अप्रिय हो चुकी हैं,
जिनके बदले कुछेक चीज़ ही मिल जाए,
जो इस शून्यता को भर सके।

अब मैं स्त्री हूँ, अनेकों जिम्मेदारियों की,
जिनकी आदतें नहीं लगानी पड़तीं,
बस बीत जाना होता है उस चाँद की तरह,
जो रात अंधकारहीन करने के चक्र में,
खुद को सिमित करता जाता है।

अब मैं पत्नी, गृहणी और माँ के किरदार में,
सभी रिश्तों को पूर्ण करती जाती हूँ।
मैं खुद को अधूरा करती जाती हूँ।

मैं खुद को अधूरा करती जाती हूँ।



अंकित कुमार
सहायक श्रेणी-III (सामान्य)
प्रशासन अनुभाग
भा.खा.नि., मं.का.बरेली



कभी थी इस देश कि जंग, मिट्टी की खुशबू में लिपटी,
अब है ये सोच, जो सवालों में सिमटी।

पहले थी आज़ादी, जंजीरों को तोड़ने की बात,
अब हो गई है वही आज़ादी, खुद को पहचानने की सौगात।

हँसी में खोए थे जो, अब न्याय की बात हैं करते,
गलत को देखकर अब, नहीं चुप हैं रहते।

सड़कों पर लग रहे हैं नारे, दिलों में उमड़ते विचार,
अब आज़ादी सिर्फ़ शोर नहीं, बल्कि है सुधार कि गुहार।

आज़ादी अब जिम्मेदारी की बन रही है पहचान,
नागरिकों की चेतना को जगा, डाल रही है उनमें नई जान।

जो पहले नियमों को बोझ थे समझते,
अब वही नैतिकता को अपनी पहचान हैं कहते।

आज़ादी अब सिर्फ़ उड़ान नहीं, दिशा भी है,
युवा अब सवाल ही नहीं, जवाब भी हैं।

आजाद हमें अंग्रेज, कहानियों में कर गये,
किन्तु कैसे रहना है आजाद, ये नवयुवकों ने किये तय।

आजादी का अर्थ नहीं है चुप रहना,
बल्कि गलत को सवालों के कटघरे में है खड़ा करना।

भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उ.) में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियां



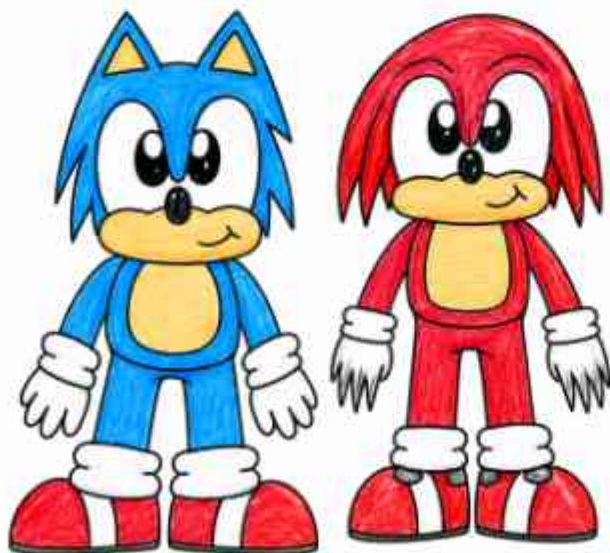


पिंकी बर्मन,
प्रबंधक (गु.नि.),
क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ

भारत मंडपम नई दिल्ली में 14-27 नवंबर 2025 तक आयोजित 44वें भारतीय अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला
2025 में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए पीएसयू और पीएसबी के मंडप में कांस्य पदक से पुरस्कृत
भारतीय खाद्य निगम के स्टॉल की कुछ झलकियां।



भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उ.) में दिनांक 27.10.2025 से 02.11.2025 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। वर्ष 2025 में “सतर्कता: हमारी साझा जिम्मेदारी” पर केंद्रित सप्ताह में सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा, पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता, स्लोगन लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई।



मो. शाजिल रजा, पुत्र:
महवश फातिमा,
सहायक श्रेणी द्वितीय (तक.),
आंचलिक कार्यालय (उ.)

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा अधीनस्थ कार्यालयों का सफल राजभाषा निरीक्षण





भारतीय खाद्य निगम
FOOD CORPORATION OF INDIA

सुरक्षित अन्न | समृद्ध भारत

**भारतीय खाद्य निगम,
आंचलिक कार्यालय (उत्तर) नोएडा**

